IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित साहित्यमें चेतना की धारा

डॉ. संगीता रंगारी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
भाासकीय महाविद्यालय रामाटोला
जिला : राजनांदगांव (छ.ग.)

भोधसार – दलित साहित्यकारों ने अपनी भावनाओं को बेझिझक अपनी कलम से कागज के पन्नें पर उतारा है। प्रतिवर्श दलित साहित्य का प्रका ान हो रहा है। उस पर विचार विम र्ा हो रहा है। ऐसा कहा जा सकता है कि दलित साहित्य हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा होगी। दलित साहित्य सच्चाई के रूप में स्थापित हो चुका है। चाहे मराठी हो या हिन्दी। भारत की लगभग हर भाशा में दलित साहित्य का सृजन हो रहा है। दलित समाज सदैव समाज से उपेक्षित रहा है और साहित्य से भी। अपनी पहचान और अपने अस्तित्व के लिए दलितों को निरंतर संघर्श करना पड़ा। डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर दलित चेतना एवं साहित्य के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। साहित्य जगत में दलित चेतना पर विचार करे तो हम पाते है कि दलित साहित्य सामाजिक चेतना के संवाहक के साथ–साथ समता एवं बंधुत्व की भावनाओं का पक्षधर है।

प्रस्तावना – भारतीय इतिहास में दलितों का अपना वि ोश इतिहास रहा है। विभिन्न जातियों, उपजातियों में बंटे इनके अपने कुनबे एवं संस्कृतियाँ है और ये दे ा के मूल निवासी है। वर्तमान परिदृ य में हम देखते है कि दलित साहित्य का वै ाश्य बढ़ता जा रहा है। अनुभूति की प्रामाणिकता दलित साहित्य में देखी जा सकती है क्योकि घटना तथा परिघटनाओं का वह स्वयं साक्षी होता है । नवीन चेतना की अनुगूंज दलित साहित्य में है।

दलित भाब्द की परम्परा की भ्रुरूआत के संबंध में विभिन्न मत है। कईयों का कहना है कि यह भाब्द मराठी रचनाकारों ने प्रयोग किया और वहाँ से यह भाब्द आया है अर्थात दलित साहित्य का प्रारम्भ महाराश्ट्र से हुआ है, ऐसा माना जाता है। वास्तव में दलित भाब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के दल धातु से हुई है जिसका अर्थ है कुचनला, तोड़ना, विभाजित करना या यूं कह सकते है टूटा हुआ, भाोशण का ि ाकार, मसला हुआ, रौंदा हुआ, अपमान बोध, जाति वर्ण बोध।

भारत में वर्णव्यवस्था के संबंध में ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में चार वर्णो का उल्लेख मिलता है। एक वर्ण के भीतर अनेक जातियाँ भाामिल है। यही कारण है कि भारत में कई जातियाँ एवं उपजातियाँ है। भारतीय समाज का विभाजन मुख्यतः दो वर्गो में हुआ है। पहला स्पृ य एवं दूसरा अस्पृ य। स्पृ य समाज का अपना वर्चस्व रहा है। वही अस्पृ य समाज भाोशित पीड़ित, दबे कुचले रहे है। स्पृ यों के अपने नियम थे। स्पृ यों के बनाये नियम का अस्पृ य समाज यदि उल्लंघन करे तो वह दण्डनीय अपराध माना जाता था । ये नियम अस्पृ यों की अस्मिता के विरूद्ध थे। जिसके संबंध में डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर ने उल्लेख किया है –

- अस्पृ यों की परछाई पड़ने छू जाने से पाप लगता है, अर्थात अस्पृ यों को अपनी परछाई भी स्पृ यो पर नही पड़ने देना है एवं छूना नही है। यदि वह इस नियम का पालन नही करता तो वह अपराध है।
- अस्पृ य खपरेल की छत बनाकर निवास नही कर सकता। यदि वह ऐसा करता है तो वह अपराधी है।
- अस्पृ य के पास किसी भी प्रकार की संपत्ति, प ु या भूमि हो तो वह अपराध है।
- अस्पृ य अच्छे कपड़े पहनने का अधिकारी नही है। जूते, घड़ी, सोने के आभूशण धारण करना वर्जित है, इस नियम का उल्लंघन करना अपराध है।
- अस्पृ य अपने बच्चों के अच्छे नाम नही रख सकता यदि उसने ऐसा किया तो वह अपराधी है। उसे ऐसे नाम रखने है जो घृणित है।
- अस्पृ य किसी हिन्दू के सामने कुर्सी पर बैठे तो वह अपराधी है।
- अस्पृ य लोगों के घर गाँव के दक्षिण दि ाा में ही हो क्योकि दक्षिण दि ाा को अ ुभ माना जाता है। अस्पृ य घोड़े पर सवार होकर या पालकी में बैठकर गाँव से गुजरता है तो वह अपराध है।

उपरोक्त नियम अस्पृ यों पर लागू थे। इन नियमों का उल्लंघन करने पर अस्पृ यों के लिए अत्यधिक कठोर एवं अमानवीय यातनाओं का प्रावधान है। भेद भाव से ग्रसित भारतीय समाज में अस्पृ यों को कभी भी स्वीकृति नहीं मिली।

अस्पृ यों के संबंध में यह कहा जाता रहा है कि वे वेदों की सत्ता को स्वीकार नही करते। काल्पनिक हिन्दू देवी देवताओं को पूजते नही। जो गौ पूजा नही करते, जिनसे छूत लगती है आदि। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर अस्पृ यों को अधिकार दिलाने निरंतर संघर्श करते रहे। न केवल अनुसूचित जाति बल्कि अनुसूचित जनजाति के अधिकारों के लिए एवं उनकी अस्मिता के लिए लगातार संघर्श करते रहे। उनके सर्वागींण विकास हेतु निरंतर संघर्श किया एवं अस्पृ यों को

संविधान में अनुसूचित जाति का दर्जा दिया। डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने दलितों को आत्मसम्मान, स्वाभिमान, अस्मिता का अहसास कराया एवं भारतीय समाज में अपनी पहचान बनाई।

"डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अंग्रेजी में डिप्रेस्ट एवं मराठी में बहिश्कृत" तथा अ पृ य भाब्द जिन लोगों या जिन जातियों के लिए इस्तेमाल किया है हिन्दी एवं मराठी साहित्य में उन्हें दलित कहा जाता है। इस दायरें में व्यवहारिक रूप से यही लोग अधिक आते है, जिन्हें भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति का दर्जा दिया जाता है।"[1]

डॉ. रामचंद्र ने दलित को परिभाशित करते हुए लिखा है ''दलित अस्मिता बोधक भाब्द है। यह संबोधन उत्पीड़न तथा भाोशण का बोध कराता है। भाोशक वर्ग के कृत्यों को याद दिलाने वाला क्रांतिकारी भाव इस भाब्द में निहित है। इसमें चेतना की अनुगूंज है''। [2]

ओमप्रका ा वाल्मीकि 'दलित' का अर्थ बताते हुए लिखते है–''जिसका दहन और दमन हुआ है, जिसे दबाया गया है, जिसका उत्पीड़न किया गया है, जिसकी उपेक्षा हुई है, रौंदा हुआ मसला हुआ कुचला, विनश्ट, पस्त हिम्मत, हतोत्साहित वंचित आदि।'' [3]

दलित चेतना पर विचार करे तो सर्वप्रथम दलित साहित्य के नामकरण की ओर दृश्टि डालते है तो पता चलता है कि दलित साहित्य के नामकरण पर प्रारम्भ से विवाद रहा है। कुछ गैर दलित साहित्यकारों ने दलित साहित्य को "अत्यंज साहित्य" करार दिया वही कुछ दलित साहित्यकारों ने उसे अम्बेडकरीय साहित्य कहना चाहा। अन्ततः दलित साहित्यकारों ने आपसी सहमति द्वारा इस साहित्य को दलित साहित्य ही कहा।

दलित साहित्य सन्तो की ऐतिहासिक भूमिका को पूर्ण सम्मान के साथ स्वीकार करता है। महात्मा बुद्ध के प चात् मध्यकाल में निर्गुण काव्य धारा के सन्तों ने वर्ण व्यवस्था के संबंध में अपनी आवाज बुलन्द की। मध्यकालीन सन्तों ने सम्पूर्ण दे ा में तीखे भाब्दो के माध्यम से अपना चिंतन प्रस्तुत किया।

कबीर की वाणी – तुम कत ब्राम्हण हम कत भाूद।
हम कत लोहू तुम कत दूध ।

कबीरदास जी एवं नामदेव ने अपनी वाणी में समतावादी विचारों का प्रचार प्रसार किया। पंजाब के गुरूनानक देव ने वर्ण व्यवस्था के विरोध में स्वर मुखरित करते हुए दादूपंथ की भाुरूआत की। सन्तो ने वर्णव्यवस्था के विरोध में अपने विचारों को प्रस्तुत किया।

हिन्दी साहित्य में सिद्धों और नाथो के प चात् दलित चेतना का प्रस्फुटन मध्यकालीन सन्त साहित्य से हुआ है। सदियों से चली आ रही वर्ण व्यवस्था को निर्गुण काव्य धारा के कवियों ने पहली बार यह चुनौती दी की ''पत्थर पत्थर है और मनुश्य मनुश्य।'' भगवान किसी मंदिर में विद्यमान पत्थर की मूर्ति में नहीं है।

दलित साहित्य के संबंध में डॉ. नामवर सिंह का कथन है–''जन्मजात दलित होने के कारण अनुभव के दौर से एक आम इंसान को गुजरना पड़ता है, उसका प्रत्यक्ष अनुभव स्वयं एक दलित को ही हों सकता है। अपनी समस्त अनुभूतियों तथा कल्पनाओं का विस्तारण के बावजूद मैं एक गैरदलित ही कहलाऊँगा, क्योंकि मैं उस अनुभव को उतनी तीव्रता के साथ अनुभव नही करा सकता। मराठी के अनेक रचनाओं को पढ़कर जो अनुभव होता है, सच्चे अर्थो में वही दलित साहित्य है।'' 4

डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलित साहित्य के मूल प्रेरणास्रोत है। गौतम बुद्ध, रैदास, सावित्री बाई फूले, महात्मा ज्योतिबा फूले भी दलित साहित्य के प्रेरणास्रोत है जिन्होंने हिन्दू वर्णव्यवस्था का विरोध कर सामाजिक, वैचारिक चेतना लाने का प्रयास किया। दलित साहित्य सामाजिक, मानसिक, धार्मिक, जातिवादी व्यवस्था या अन्य किसी प्रकार के भी उत्पीड़न का विरोधी है।

साहित्य के क्षेत्र में दलित साहित्य को सवर्णों, विद्वानों द्वारा स्वीकृति प्रदत्त नही की गई किन्तु इसकी व्यापक लोकप्रियता को देखते हुए उन्हें स्वीकृति देनी पड़ी। उपन्यासकार एवं कहानीकार प्रेमचंद, नागार्जुन को दलित चेतना के साहित्यकार के रूप में लाने की कोि ा ा की गई। इतना ही नही सवर्ण लेखक स्वयं भी दलित लेखन करने लगे। यहाँ मुख्य रूप से सहानुभूति एव स्वानुभूति के मुददे है। सहानुभूति दलित साहित्य वह है जिसे गैर, दलित ने लिखा है। स्वाहानुभूति दलित साहित्य वह है जो स्वयं दलित साहित्यकार अपनी खुद की अनुभूति के आधार पर लिखता है वास्तव में वही दलित साहित्य है। आज सवर्ण समाज द्वारा किये जा रहे अत्याचार भाोशण, अन्याय, दमन के खिलाफ संघर्श, बंधुत्व एवं समता पर आधारित समाज की स्थापना हेतू दलित साहित्य की रचना की जा रही है।

महात्मा ज्योतिबा फूले दलित चेतना के आधार स्तम्भ माने जाते है। महात्मा ज्योतिबा फूले का जन्म 11 अप्रैल 1927 को पूणे में माली परिवार में हुआ। बाल्याकाल से हिन्दू धर्म की विसंगतियों छुआ–छुत, ऊँच नीच की भावना, जातिभेद ने उनके जीवन मे उथल पुथल मचा रखा था। तत्कालीन मराठा समाज में दलित जातियों एवं भाूद्र की स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। एक ओर गुलाम भारत तो दूसरी ओर अस्पृ य समझे जाने वाले की स्थिति बदतर थी। वे गुलामों से भी बदतर जीवन बिता रहे थे। वे दैनिक जीवन की छोटी मोटी आव यकता जैसे खेती, मजदूरी, कपड़ा बुनना, छोटे–मोटे घरेलू धंधो से भरपेट भोजन जुटाने में असमर्थ थे। प्रगति ील विचारक महात्मा ज्योतिबा फूले समझ गये कि अस्पृ यता, जातिव्यवस्था और जन्म से ऊँच नीच के भेदभाव के रहते पिछड़े लोग आगे नही बढ़ सकते। दासतायुक्त जीवन एवं बंधुआ जीवन बिताने के अतिरिक्त उनके सामने प्रगति के समस्त द्वार बंद थे। इन्हें अपनी ि ाक्षा पूर्ण करने के प चात् यह कटु अनुभव हुआ कि भाूद्र माली का ि ाक्षित बेटा अपने पैतृक व्यवसाय में आ गया है। फूले जी का वि वास था कि दलितों में ि ाक्षा के बिना कोई सुधार और चेतना नही आ सकती। उनके मन में विचार आया कि

दलित स्त्रियाँ प ुपत जीवन बिताती है, अगर उन्हें ि ाक्षित कर दिया जाये तो आने वाली पीढ़ियों का स्वरूप बदल जायेगा।

महात्मा ज्योतिबा फूले ने इस सिलसिले को समाप्त कर दलितों और भूद्र जातियों को संगठित करने का संकल्प लिया, उन्होने ि ाक्षा की ज्योति प्रज्जवलित करने का संकल्प लिया। उसी दौरान वे एक ब्राम्हण मित्र के विवाह में सम्मिलित हुए। वहाँ उन्हें अपमानित करने की घटना ने उनके चिंता और कर्म की धारा ही मोड़ दी। उनके मन में यह बात घर पर गई कि दलितो में ि ाक्षा बहुत जरूरी है। अपनी पत्नी को ि ाक्षित करने के प चात् भारत में ज्योतिबा एवं सावित्री बाई फूले (पत्नी) भारत में भूद्राति ूद्र एवं स्त्री ि ाक्षा का आरम्भ कर नये युग के निर्माण की नींव डाली। दलितों में चेतना जगाने का कार्य किया। विद्यार्जन की महत्ता का वर्णन करते हुए ज्योतिबा फुले ने कहा–

"ि ाक्षा बिना मति गयी
मति बिना नीति गयी।
नीति बिना गति गई,
गति बिना वित्त गया।
वित्त बिना भूद्र हता ा हुये,
और गुलाम बनकर रह गये। 5

यहाँ दलित क्रांति चेतना जागृत हुई। दलित साहित्य सृजन होनें लगा। दलित साहित्य महात्मा ज्योतिबा फूले के परिवर्तन भील विचारों को ही स्वीकारता है। दलित साहित्य के सृजन में महात्मा फूले के बाद डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की मूल विचारधारा का ही व्यापक रूप है। संत रविदास जैसे महान समाज सुधारक ने न केवल वर्णव्यवस्था बल्कि जातिभेद मिटाकर मानवता का संदे ा दिया।

जात–पात में जात है, ज्यों केलन में पात।
रविदास न मानुश जुड सके, जौ लौ जाती न पात। 6

संत रविदास की वाणी सूर्य की रो ानी की भाँति चारों ओर उजाला फैलाने वाली वाणी है। इनकी वाणी दलित चेतना के उत्थान के साथ–साथ समस्त मानव जाति को समरसता के सूत्र में बाँधने के लिए प्रेरित करता है।

दलित साहित्य पर आज वैचारिक चर्चाएँ चल रही है। डॉ. श्रीरामपाल के "भोशण के ि ाकंजे" नामक काव्य संग्रह "एक नयी व्यवस्था की तला ा" नामक भीर्शक में लिखा है– भारतीय समाज में भोशित एवं भोशक दो वर्ग है। पहला उपेक्षित, अपमानित एवं सभी अधिकारों से वंचित है। वह गरीबी बेकारी से त्रस्त है, तो दूसरी ओर भोशक वर्ग समस्त अधिकारो का उपभोक्ता है।

इनका कहना है कि भाोशित वर्ग बहुसंख्यक होते हुए भी निरीह एवं असहाय है। आज भाोशण के मकड़जाल में भाग्यवाद, मूर्तिपूजा, रूढ़िवाद, कर्मकाण्ड, अन्धवि वास,छुआछूत, पूनर्जन्म रूढ़िवाद से जन जकड़ा हुआ है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा था–''गुलामों को गुलामी का अहसास करा दो गुलाम अपने आप गुलामी के फंदे तोड़कर आजाद हो जायेगें।'' इसी प्रकार भाोशित वर्ग लोग भाोशण के मकड़जाल को जिस दिन समझ जायेंगें उसी दिन से दुख से छुटकारा पाकर अपने अधिकार को समझेगें और उन अधिकारों को आत्मसात करेंगे भाोशण के मकड़जाल भाोशित के अहित एवं भाोशकहित में है। यह मकड़जाल भोशक वर्ग के लोगों ने भाोशित वर्ग के बुद्धि, धन एवं श्रम को हड़पने के लिए किया है। इस संबध में कवि विनीत विक्रम बौद्ध जी ने लिखा है–

''पा ा के प्रपंच को प्रसारते चले गये,
हर कदम कदम पे होड़ को हारते चले गये।
हक हमारा छीन दीन हीन कर दिया,
हम गुलाम जिंदगी गुजारते चले गये।
देवदूत वे हमें अछूत मानते रहे,
हम उन्हीं की आरती उतारते चले गये।
वे हमारे झोपड़े उतारते रहे सदा,
हम उन्हीं की कोठियाँ सवारते चले गये।
वे हमें सर पे लात मारते रहे सदा,
पूज उनके पाँव हम पखारते चले गये।
बेजमीन बेमकान बेपनाह कर दिया,
जिन पदो की ठोकरो से ठेलते रहे हमें।
उन पदो की धूल सर पे धारते चले गये,
उनके ठाट–बाठ उनकी आन–बान के लिये।
हम खु ाी से जि मो जान वारते चले गये,
स्वर्ग जैसी बस्तियों में उनकी मौज मस्तियॉ।
हम नरक की गोद से निहारते चले गये,
नित नये लिबास में अदल रहे बदल रहे।
चीथड़ो से लाज हम निवारते चले गया,
उनके जी मने को रोज व्यंजनों की थालियाँ।
गुड़ चने चबा के हम डकारते चले गये,
भाग्य का भरोसा तो परोजते रहे सदा।

श्रम का लाभ वे हमे नकारते चले गये,
पा ा वे प्रपंच के पसारते चले गये।
हम कदम कदम पे होड हारते चले गये।। 7

भोशितों की दिनता, गुलामी, अविद्या, भाग्यवादिता को विनीत विक्रम बौद्ध ने अपनी कविताओं मे उकेरा है।

देवता का भाब्दिक अर्थ देने वाला होता है किन्तु काल्पनिक देवता किसी को भी कुछ नही देता है। गाँव–गाँव में गली गली में कल्पित देवता विराजमान है। वास्तविक देवता हमारे पूर्वज हमारे माता पिता होते है। महाकवि विनीत विक्रम बौद्ध लिखते है कि पत्थर की मूर्तियाँ मूर्तिकार बनाता है। उसमें प्राण प्रतिश्ठा करने वाले ढोंगी क्या अपने मरे हुये माता पिता एवं प ुओं के भावों में प्राण प्रतिश्ठा कर सकते है। मुगल भारत आये, उन्होंने मुर्तियों का भंजन किया तब मुर्तियों ने चुपचाप अपना भंजन स्वीकार किया। न वे भागी न बचने का उपाय किया। इसलिए यह प्राण प्रतिश्ठा केवल झूठ मात्र है।

भोशक पत्थर मूर्ति बनाते
प्राण प्रतिश्ठित है बतलाते
समझो इसको बिलकुल झूठ
प्राण नही है बिलकुल ठूंठ।

इस प्रकार दलित साहित्य में चेतना के स्वर मुखरित हुए है। यह चेतना नवजागरण एवं नवीन दृश्टिकोण को द ार्ाता है।

डॉ. जय प्रका ा कर्दम समाज को प्रगति ाील बनाने हेतु हुंकार भरते हुए सीधे एवं सपाट गद्य की भौली में इस तरह कहा –

जब तक स्मृतियॉ रहेंगी,
रामायण, गीता और वेद रहेंगे,
जब तक वर्ण सुचिता रहेगी,
अ पृ यता रहेगी, जातिवाद रहेगा।
समाज को प्रगति ाील बनाना है।
जाति के जहर को मिटाना है तो
इन तथाकथित धर्मग्रन्थों को आग लगानी होगी,
और नकारना होगा। 8

स्वामी अछुतानन्द हरिहर मूलनिवासी को जागृत करने के लिए कुछ इस तरह लिखते है –

"यदि खून में कुछ जो ा हो,
ओ बेहो ा कौमो जो हो ा हो

तो क्यों पड़े खामो ा हो
जागो बहुत बर्बाद हो
सोते तुम्हें मुद्दत हुई
तज नींद अब तो जागिए
हजम होते वं ा अपने
को जल्द बचाइए।" 9

इन्होंने बताने का प्रयास किया कि जागरण में ही मुक्ति है, यदि भाोशित और पिड़ित समाज जागृत नहीं होगा तो सब कुछ नश्ट हो जायेगा। स्वामी अछूतानन्द चेतना के संवाहक के रूप में सम्पूर्ण दलित समाज को जगा रहे है।

साहित्य के क्षेत्र मे महिला साहित्यकार सावित्रीबाई फूले भी रही है। चूँकि वह मराठी साहित्यकार थी और समुचे समाज की बात रखी है। उनके साहित्यिक योगदान से भारतीय जगत उपरिचित रहा है। आज उनके साहित्य को पढ़ना आव यक है। वह ऐसी महिला लेखिका है, जिन्होंने काफी संघर्श कर स्त्रीयों की ि ाक्षा पर बल दिया। सावित्री बाई फुले ने महिलाओं के उत्थान के लिए मात्र 17 वर्श की उम्र में सन् 1848 में पूणे में दे ा का पहला गर्ल्स स्कूल खोला। सावित्री बाई फुले मराठी आधुनिक कविता कि सुत्रधार रही है, और उस दौरान जब वह महिला होने के साथ–साथ भाुद्र भी थी। भाुद्र स्त्रियों का पढ़ना नामुमकिन था। स्वयं अध्ययन तो किया साथ ही हर धर्म एवं वर्ग, जाति की लड़कियों की ि ाक्षा के लिए आगे आई। विद्रोही जागरण काव्य की पहली कवयित्री सावित्री बाई फूले है। उनके कुल दो काव्य संग्रह है जिनमें काव्य संग्रह "काव्य फूले" है जो 1824 मे प्रकाभित हुआ था, जिसमें 41 रचनाएँ थी। इन रचनाओं में उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं प्रकृति पर केन्द्रित अभिव्यक्ति की। इस काव्य संग्रह के प्रका ान के समय सावित्री बाई फुले की उम्र मात्र 23 साल की थी। उनकी दूसरी रचना संग्रह ''बावनीक ाी सुबोधरत्नाकर (असली मोतियों का सागर)'' वर्श 1891 में प्रकाि ात हुआ जिसके छंद में ज्योतिबा फूले की जीवनी है, और मराठी इतिहास भी। आज इंटरनेट का दौर है। इंटरनेट के माध्यम से उनके काव्य को पढ़ने का अवसर मिल रहा है और कवयित्री के रूप में उन्हें जानने का हमने प्रयास किया। सावित्रीबाई फूले ने ि ाक्षा को सर्वोत्तम धन माना है। वह कहती है जो व्यक्ति ि ाक्षित है, ज्ञान से परिपूर्ण वह हर जगह सम्मान का अधिकारी है।

"विद्या ही सर्वश्रेश्ठ धन है
सभी धन दौलत से
जिसके पास है ज्ञान का भण्डार
है वो ज्ञानी जनता की नजर मे"

सावित्री बाई फूले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ। इस दिन को पहली महिला ि ाक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इन्हीं के कारण महिलाओं को ि ाक्षा का अधिकार मिला। रूढियों एवं अंधवि वास पर चोंट करते हुए विज्ञान का सहारा लेते हुए कहती है –

''यदि पत्थर पूजने से होते बच्चे
तो फिर नाहक
नर नारी भाादी क्यों करते ?''

महिलाओं को सदियों से घर का काम–काज सौंप दिया और उनसे उनके अधिकार छीन लिए गए। इस गुलामी से स्त्रियों को केवल ि ाक्षा ही आजाद करा सकती है । वह कहती है –

''चौंका बर्तन से बहुत जरूरी है पढ़ाई
क्या तुम्हें मेरी बात समझ मे आई ?''

सावित्रीबाई फूले ने लड़कियों की ि ाक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित किया । महिलाओं के साथ हो रहे भेद–भाव और गुलामी के कारणों को जानकर वह भारतीय परिप्रेक्ष्य मे मनुस्मृति को दोशी मानती है और कहती है –

''मनुस्मृती की कर रचना
मनुचार वर्णो का जहरीला निर्माण करे
उनकी कदाचारी रूढि हमे ाा चुभनभरी
स्त्री भाुद्र सारे गुलामी की गुफा में बन्द
प ाु की भाँती भाूद्र बसते दड़बों मे''

सावित्री बाई अपनी रचना मे बताती है कि मनु की मनुस्मृति में यह है कि औरत हमे ाा गुलामी करती रहे और भाूद्र प ाुओं से बत्तर जीवन यापन करें। ऐसी निर्मम व्यवस्था पर करारी चोट कर मुक्ति संभव है ।

सावित्रीबाई फूले ने पे ावाओं के राज के समय भाूद्र पर होने वाले अत्याचार उन पर हो रहे जुल्म पर लिखती है ।

"पे ावा ने रात पसारे वे सत्ता राजपाठ संभाले
भाूद्र करे भाूद्र हो गए भयभीत
थूक करे जमा गले में बंधे मटके में
रास्तों पर चलने पर लगी पाबंदी
चलो धूल भरी पगडंडी कमर पर बांधे
झाडू से नि ाान मिटाकर
इतनी अधिक पे ावाओं ने खड़ी की बाधाएँ
अति ाूद्र बनाकर नीच कहकर

अपनी नीचता दिखाकर''

पे ावाओं के राज्य में किस तरह भूद्रों पर जुल्म हुए यह सावित्री बाई बताती है कि वे अपना थूक कही पर थूक नही सकते थे। इसके लिए गले में उन्हें मटकी लेकर चलना पड़ता था, ऐसा ना करना उनके लिए अपराध था । रास्ते पर चलने पर भूद्र के पांव के नि ाान जमीन पर ना पड़े इसलिए वे अपनी कमर मे झाडू बंधकर चलते थे ताकि उनके पैरो के नि ाान मिट जाए ।

सावित्रीबाई फूले की काव्य रचनाओं में एक क्रांति की गुंज दिखायी पड़ती है। इन्होंने स्त्री ि ाक्षा के लिए कई तरह के संघर्श कर अंततः लड़कियों के लिए स्कूल प्रारंभ कराया। यह कितना दुर्भाग्य एवं अन्याय है कि सावित्रीबाई फूले ने महिलाओं की ि ाक्षा के लिए संघर्श किया, मराठी साहित्य में अपनी महती भूमिका निभाई, किंतु भारतीय साहित्य में उनके साहित्यिक योगदान से आज भी गिने चुने लोग ही परिचित हो पाए है। आज आव यकता है ि ाक्षा का अलख जगाने वाली क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फूले को पढ़े और समझकर उनके बताये मार्ग पर चले।

निश्कर्शतः दलित साहित्य एक उद्दे यपूर्ण लेखन है जो भारतीय साहित्य को समृद्ध, स ाक्त, मजबूत बना रहा है। वर्तमान परिदृ य में दलित लेखन की चर्चा साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में बखूबी किया जा रहा है। दलित साहित्य में चेतना की वि ाश्ठ साहित्यिक धारा का संचार हो रहा है।

दलित साहित्यकारों ने अपनी भावनाओं को बेझिझक अपनी कलम से कागज के पन्नें पर उतारा है। प्रतिवर्श दलित साहित्य का प्रका ान हो रहा है। उस पर विचार विम र्ा हो रहा है। ऐसा कहा जा सकता है कि दलित साहित्य हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा होगी। दलित साहित्य सच्चाई के रूप में स्थापित हो चुका है। चाहे मराठी हो या हिन्दी। भारत की लगभग हर भाशा में दलित साहित्य का सृजन हो रहा है। दलित समाज सदैव समाज से उपेक्षित रहा है और साहित्य से भी। अपनी पहचान और अपने अस्तित्व के लिए दलितों को निरंतर संघर्श करना पड़ा। डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर दलित चेतना एवं साहित्य के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। साहित्य जगत में दलित चेतना पर विचार करे तो हम पाते है कि दलित साहित्य सामाजिक चेतना के संवाहक के साथ–साथ समता एवं बंधुत्व की भावनाओं का पक्षधर है। दलित साहित्य में ज्योतिबा फूले, डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर कबीर, रैदास, सावित्रीबाई फूले जैसे व्यक्तित्व दलित चेतना के स्वर को मुखरित करते है।

संदर्भ –

1) रजत रानी मीनू, नवेंद ाक की हिन्दी दलित कविता पृश्ठ क्र. 2.
2) सर्राफ, डॉ. रामकली, डॉ. रामचंद्र, दलित लेखन के अन्तर्विरोध, दिल्ली संस्करण : ि ाल्पायन, 2012, पृ. क्र. 187
3) वाल्मिकी, ओमप्रका ा दलित साहित्य का सौंदर्य ाास्त्र, नई दिल्ली : राधाकृश्ण प्रका ान, संस्करण 2001, पृ. क्र. 13
4) सिंह, डॉ. एन. दलित चिंतन अनुभव और विचार, नई दिल्ली : वाणी प्रका ान, संस्करण 2015, पृ. क्र. 90
5) रत्न , डॉ. राजीव, अम्बेडकर टूडे, सन् 2010, पृ. क्र. 08
6) ——————— वहीं ——————— पृ. क्र. 13
7) ——————— वहीं ——————— पृ. क्र. 80
8) बेचैन, डॉ. भयोराज सिंह बेचैन, सामाजिक न्याय एवं दलित साहित्य, नई दिल्ली : वाणी प्रका ान पृश्ठ क्रं. 34
9) ——————— वहीं ——————— पृ. क्र. 198